संरचनावाद की आलोचनाएँ

संरचनावाद का सक्रिय योगदान मनोविज्ञान के क्षेत्र में रहा है, फिर भी आलोचकों ने इस स्कूल को एक रूढ़िवादी (orthodox) कहकर तीव्र आलोचना की है। इसके प्रमुख आलोचनाएँ निम्नांकित हैं —

→ आलोचकों का मत है कि टिचेनर का संरचनावाद काफी संकीर्ण तथा चेतन अनुभूति के विश्लेषणात्मक ढाँचा तक सीमित था।

→ आलोचकों का मत है कि टिचेनर का मनोविज्ञान के व्यावहारिक पहलू में कोई अभिरुचि नहीं थी, जो उनकी भूल थी। उस समय मनोविज्ञान की प्रयुक्त शाखाएँ (applied psychology) जैसे बाल मनोविज्ञान, असामान्य मनोविज्ञान, औद्योगिक मनोविज्ञान आदि शाखाओं के अध्ययन के क्षेत्र से अपने आप को अलग रखा।

→ आलोचकों का मत है कि अन्तर्निरीक्षण विधि कई बिंदुओं पर अपर्याप्त थी। अन्तर्निरीक्षण से स्वयं चेतन अनुभूति के अन्तर्वस्तु में ही परिवर्तन आ जाता है। आलोचकों का यह भी मत है कि मनोविज्ञान के कुछ पहलू ऐसे हैं जिसे अन्तर्निरीक्षण विधि से अध्ययन करना संभव नहीं है।

→ गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों द्वारा भी संरचनावादियों के तात्विक विश्लेषण का विरोध किया गया। इनका मत था कि मनोवैज्ञानिक घटनाओं का अध्ययन समग्र रूप से करना चाहिए न कि अंशों में तोड़ कर।

इन आलोचनाओं के बाद भी एक सम्प्रदाय के रूप में मनोविज्ञान को एक स्वतंत्र प्रयोगात्मक विज्ञान के रूप में स्थापित करने में संरचनावाद की काफी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

WK 04 • 021-344

21 JANUARY MONDAY

APPOINTMENTS

वुण्ट एवं टिचनर का तुलनात्मक अध्ययन

विलियम वुण्ट जर्मनी के लिपजिग विश्वविद्यालय में टिचनर के शिक्षक थे। टिचनर ब्रिटेन के ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से नया मनोविज्ञान सीखने आये थे। टिचनर ने अमेरिका के कॉर्नेल विश्वविद्यालय में संरचनावाद की स्थापना की। इस संप्रदाय के तहत वे वुण्ट के विचारों को परिवर्द्धित एवं परिमार्जित करते हैं। वुण्ट से उनकी कुछ समानता तथा कुछ विषमता भी थी, जो निम्नांकित हैं —

वुण्ट के टिचनर से समानता के प्रमुख बिंदु —

→ दोनों मनोवैज्ञानिकों के लिए मनोविज्ञान का विषय-वस्तु चेतन अनुभूति थी।

→ दोनों ने अन्तर्निरीक्षण प्रक्षण तथा प्रयोग को मनोविज्ञान का प्रमुख विधि माना और प्रशिक्षित अन्तर्निरीक्षकों की आवश्यकता बल दिया।

→ वुण्ट के समान टिचनर भी मनोदैहिक समानान्तरवाद में विश्वास करते थे। दोनों का मत था कि मानसिक घटनाओं तथा शारीरिक घटनाओं में स्पष्ट अंतर होता है और इनके बीच कोई अन्तःक्रिया नहीं होती है। ये एक दूसरे के समानान्तर चलते हैं और एक में परिवर्तन से दूसरा अपने आप परिवर्तित हो जाता है।

→ दोनों ने मनोविज्ञान के स्वरूप को प्रयोगात्मक बनाने की दिशा में सराहनीय प्रयास किये।

वुण्ट और टिचनर में असमानता के प्रमुख बिंदु —

→ वुण्ट का विचार था कि चेतन अनुभूति के दो तत्व होते हैं- संवेदन तथा भाव जबकि टिचनर ने तीन तत्व - संवेदन, भाव तथा प्रतिमा बतलाया। वुण्ट ने प्रतिमा को स्वतंत्र तत्व नहीं माना था बल्कि ये संवेदनों के मिश्रण से उत्पन्न होने वाला एक तत्व माना था।

Scanned with CamScanner

→ वुण्ट के अनुसार चेतन अनुभूति के दो प्रमुख विशेषताएँ होती हैं — गुण तथा तीव्रता। टिचनर ने इसमें दो और विशेषताएँ — अवधि तथा स्पष्टता को जोड़ा। इसके अलावे टिचनर ने एक और विशेषता 'विस्तार' का वर्णन किया तथा यह भी स्पष्ट किया कि विस्तार की यह विशेषता सिर्फ दृष्टि एवं स्पर्शी संवेदनों में होता है।

→ टिचनर वुण्ट द्वारा प्रतिपादित भाव के त्रिविमीय सिद्धान्त को अस्वीकृत कर दिये थे तथा इसके सिर्फ एक आयाम सुख-दुःख को ही स्वीकार किये।

→ टिचनर ने मनोविज्ञान के प्रयुक्त (applied) पहलुओं की आलोचना की। मनोविज्ञान की प्रयुक्त शाखाएँ जैसे — बाल मनोविज्ञान, पशु मनोविज्ञान, असामान्य मनोविज्ञान आदि पर टिचनर ने यह कहते कुछ ध्यान नहीं दिया कि इन सबों से मनोवैज्ञानिक सूचनाएँ नहीं मिल पाती हैं। दूसरी तरफ वुण्ट ने इस बात पर पर्याप्त बल दिया कि बच्चों एवं असामान्य व्यवहारों से भी महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक सूचनाएँ मिलती हैं।

→ इतिहासकारों ने वुण्ट को अपने आप में एक संस्थान माना है, जिन्होंने मनोविज्ञान के कार्यक्षेत्र को ही सिर्फ नहीं बदला बल्कि बहुत सारे मनोवैज्ञानिकों को प्रशिक्षित भी किया। टिचनर को इतिहासकारों ने इतना महत्व नहीं दिया और कहा कि उनके योगदानों एवं प्रयासों को देखते कुछ कहा जा सकता है कि वे मूलतः एक वैयक्तिक मनोवैज्ञानिक हैं, जिन्होंने एक सीमित दायरे में कार्य किया।

इसप्रकार टिचनर एवं वुण्ट के बीच कुछ समानताओं के होते हुए भी उनके विचारों में असमानताएँ भी हैं।

Scanned with CamScanner